भक्तिकाल

**डॉ. कृष्ण कुमार पासवान**

**सहायक प्राध्यापक**

**हिंदी विभाग**

**राम चरित्र सिंह महाविद्यालय**

**मंझौल, बेगुसराय**

**सम्पर्क :** [**ksoni.hindi@gmail.com**](mailto:ksoni.hindi@gmail.com)

यह आलेख निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर में सहायक है|

1. **भक्तिकाल की पृष्ठभूमि**
2. **भक्ति एवं भक्तिकाल से सम्बन्धि मत**

भक्ति का अर्थ :

**‘भगवद्विषयक प्रेम ही भक्ति कहलाता है।’ अलौकिक सत्ता से संबंध स्थापित करने के लिए कर्इ माध्यम हो सकते हैं। ‘ज्ञान’ एक माध्यम हो सकता है जो बुद्धि पर आधारित है। एक अन्य मार्ग ‘योग’ है जिसमें कठिन शारीरिक साधनाओं का आश्रय लिया जाता है और एक मार्ग ‘भक्ति’ का हो सकता है जो भावना पर आधरित है। भवना का संबंध ‘हृदय’ से होता है। यह सर्वसुलभ मार्ग है जिसमें आराध्य एवं भक्त के मध्य सीधा संबंध स्थापित होता है।**

भक्ति के संबंध में विभिन्न मत :**-**

**आठवीं श्ताब्दी में शंकराचार्य ने ‘अद्वैतवाद’ के सिद्धांत का प्रतिपादन किया और उन्होंने ‘ब्रह्म’ को एकमात्र सत्य कहा तथा ‘जगत’ को मिध्या बताया। इस प्रकार ‘भक्ति को उन्होंने ‘माया’ बताया। उन्होंने कहा कि भक्ति के लिए भक्त एवं भगवान की दो भिन्न सत्ताएं अनिवार्य है और भिन्नता तथा द्वैत की भावना केवल माया है। आत्मा एवं परमात्मा में द्वैत नहीं है, आत्मा ही परमात्मा है। माया के पर्दे से हठकर ही पूर्णता प्राप्त होती है। अत: उन्होंने ‘प्राप्तस्यं प्राप्ति’ के सिद्धांत को प्रस्तुत करते हुए भक्ति के मार्ग का सर्वथा निषेध कर दिया।**

**शंकराचार्य के अद्वैतवादी सिद्धांत की प्रतिक्रिया अलग-अलग विद्धांतों के रूप मं हुर्इ। रामानुजचार्य के विशिष्टाद्वैत, वल्लभाचार्य के शुद्धसद्वैत, निमर्काचार्य के द्वैताद्वैत और मध्वाचार्य के द्वैत के सिद्धांतों ने अपने-अपने तर्कों के आधार पर यह सिद्ध किया है कि ब्रह्म और जीव में एक विशेष प्रकार का संबंध है। जिसके कारण वह एक होते हुए भी भिन्न है और पुन: उस अभिन्नता को प्राप्त करने के लिए जीव को ब्रह्म की भक्ति करनी चाहिए और इस तरह उन्होंने भक्ति के मार्ग को सर्वसुलभ बताया।**

भक्तिकाल के उदय की पृष्ठभूमि एवं विभिन्न मत

**भक्तिकाल का उद्भव भक्ति आंदोलन से जुड़ा हुआ है भक्ति आंदोलन के उद्भव की विभिन्न व्याख्याएं की गई हैं जिनमें से प्रमुख व्याख्याएं इस प्रकार है-**

1. जार्ज ग्रियर्सन का मत

2. आबिद हुसैन एवं डॉ. ताराचंद का मत

3. आचार्य रामचंद्र शुक्ल का मत

4. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का मत

5. इरफान हबीब का मत

1. जार्ज ग्रियर्सन **का मानना है कि हिन्दी साहित्य में भक्तिकाल का उदय विदेशी प्रभाव के कारण हुआ है। उनका मानना है कि भक्ति करुणा एवं प्रेम पर आधारित भावना है और भावना प्रधान भक्ति भारत में नहीं थी। इंद्र के देश में करुणा मूलक भक्ति नहीं थी वरन डर पर आधारित भक्ति थी। उनका मनना है कि र्इसार्इ धर्म के मूल में भगवान यीशू का बलिदान और करुण है। इस करुणा भाव के कारण जिस तरह यूरोप में सेंट थेरेसा का आंदोलन बिजली की कौंध की तरह फैल गया था, उसी तरह भारत में भक्ति फैली। किंतु इस तर्क का खंड़न किया गया है। र्इसा से** 600 **वर्ष पूर्व बौद्ध पंथ का जन्म हो चुका था जिसके मूल में करुणा ही है। अत: करुणा पर आधारित भक्ति को विदेशी भावना कहना तर्कसंगत नहीं है।**

**2.** आबिद हुसैन एंव डॉ. ताराचंद **का मानाना है कि भक्ति आंदोलन अरबों की देन है।** 11**वीं सदी में सूफी संतों ने ही प्रेम साधना पर बल दिया था। उन्होंने लौकिक प्रेम के द्वारा र्इश्वरीय प्रेम को संभव बताया था। यह मत भी गलत है क्योंकि सूफियों से पूर्व भरत में ‘भागवत’ के द्वारा प्रेम प्रधान साधना की स्थापना हो चुकी थी।**

**3. प्रसिद्धि आचार्य रामचंद्र शुक्ल भक्तिकाल को इस्लाम के आक्रमण की प्रतिक्रिया मानते हैं। उनका कथन है कि ‘अपने पौरुष से हताश जाति के पास भगवान की शक्ति और करुणा में ध्यान लगाने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग ही क्या था? उनका मानना था कि मुसलमान शासक अत्यंत आक्रमक थे और उन आक्रांताओं ने तेजी से इस्लाम का प्रचार आरंभ कर दिया था। उस समय दक्षिण में भक्ति की लहर चल पड़ी थी, वह लहर उत्तर भारत में अपने अनुकूल परिस्थितियां पाकर विकसित होने लगी।**

**4.** आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी **ने** **आचार्य शुक्ल की व्याख्या के कुछ बिंदुओं पर विरोध जताते हुए कहते हैं कि भक्ति का उदय इस्लाम की प्रतिक्रिया स्वरूप नहीं हुआ वरन उसका सहज विकास हुआ। उनका मानना है कि ओजस्वता से पूर्ण साहित्य डरी हुर्इ और हताश जाति का नहीं हो सकता। वे कहते हैं कि यदि इस्लाम नहीं भी आता तो भी भक्ति साहित्य का बारह आना वैसा ही होता जैसा आज है। वस्तुत: आचरण की पवित्रता, कर्मकांडों के विरोध और मानव की समानता आदि के संस्कारों की स्थापना हेतु भारतीय परंपरा का सहज विकास हो गया।**

**5.** इरफान हबीब **का मानना है कि इस्लाम के आगमन से अवर्णों की स्थिति में सुधार हुआ। आर्थिक स्थिति में सुधार होते ही अवर्णों को आत्मसम्मान की सुध हुर्इ। निर्गुण परंपरा में अधिकतर नीची जाति के कहे जाने वाले लोग हैं जिन्होंने स्वाभिमान की लड़ार्इ लड़ी और वर्णाश्रम का विरोध किया। इस तर्क में भी कुछ विरोधाभास है क्योंकि इस्लाम के आगमन से पहले ही मोची, जुलाह, नार्इ आदि पहले से ही आत्मनिर्भर थे और उनकी आर्थिक स्थिति में अचानक विस्फोट नहीं आया और दूसरा सगुण परंपरा के अधिकतर कवि उच्च जाति के हैं।**

**भक्तिकाव्य के रूप उदय के संबंध में किसी एक तर्क को प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। यह आंदोलन उस समय की राजनीतिक, आ​र्थिक, सा​माजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों की सं​श्लिष्ट प्रतिक्रिया है। इतने बड़े आंदोलन का एक प्रमुख कारण निर्धरित करना तर्क संगत नहीं है अत: यह कहा जा सकता है कि इस आंदोलन पर बहुआयामी प्रभाव पड़े।**

**(समाप्त)**